'दीक्षा' उपन्यास के दर्पण से सामाजिक यथार्थ के दर्शन

रेखा रानी
शोधार्थी, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार (भारत)

Received: July 17, 2018 Accepted: August 30, 2018

ABSTRACT *साहित्य समाज का न सिर्फ प्रतिबिम्ब होता है, बल्कि वह समाज के लिए मार्गदर्शिका की भूमिका का निर्वहन भी करता है। प्रारंभ से ही समकालीन परिस्थितियाँ साहित्यकारों को प्रभावित करती रही हैं। यही कारण है कि उनके चिंतन और कल्पना के केन्द्रबिंदु में देश–काल की स्थिति, मनुष्य और समाज सदैव से रहे हैं। सहभोक्ता बनकर साहित्यकार अपने समय के तनावों, द्वन्द्वों, अंतर्विरोधों और घटनाओं के साथ न सिर्फ तादात्म्य स्थापित करते हैं, अपितु अपने रचनात्मक दायित्व का निर्वहन करते हुए अपने समकालीन यथार्थों को पकड़ने की कोशिश भी करते हैं। इन यथार्थों को उजागर करने के लिए साहित्यकार कभी प्रतीकों का, तो कभी मिथकों का सहारा लेते रहे हैं। मिथकों को माध्यम बनाकर अपने समय के यथार्थ चित्र को प्रस्तुत करने का एक सुंदर और सफल प्रयास उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली जी ने भी किया है। उनके मिथकीय उपन्यासों में समकालीन समाज के यथार्थ जीवन की स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। 'दीक्षा' उपन्यास में राम की पौराणिक कथा के माध्यम से कोहली जी ने वर्तमान समाज के अनेक संदर्भों से पाठकों को रूबरू कराया है। राम और उनसे जुड़े प्रसंगों को माध्यम बनाकर उपन्यासकार ने जिस कथा को पाठकों के समक्ष बया किया है; वह कथा वर्तमान आधुनिक समाज की एक सच्ची तस्वीर को खींचती है। प्रस्तुत शोध आलेख 'दीक्षा' उपन्यास में वर्णित राम के पौराणिक कथा के माध्यम से कोहली जी के समकालीन समाज के यथार्थ घटनाचक्रों को रेखांकित करता है।*

Keywords: *साहित्य, समाज, मिथकीय उपन्यास, सामाजिक यथार्थ, समकालीन।*

प्रस्तावनाः **''केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।**
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।।''[1]

मैथलीशरण गुप्त जी की उक्त कथन साहित्यकार और समाज के बीच के गहरे रिश्ते को बया करती है। साहित्यकार अपने साहित्य के आईनें से न सिर्फ समाज की कमियों और बुराइयों को उजागर करता है, बल्कि इनके सुधारों के लिए उचित मार्ग और उपाय भी बताता है। साहित्यकार जिस समाज में रहते हैं, वहाँ की प्रत्येक अच्छी–बुरी परिस्थितियाँ उनको प्रभावित करती हैं। उनके मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। यही कारण है कि पाठकों को उनकी रचनाओं में अक्सर सामाजिक जन–जीवन के दर्शन होते हैं। युगों से प्रतीकों, बिम्बों, पुराकथाओं इत्यादि अनेक माध्यमों की सहायता से समाज की यथार्थ छवि को रचनाओं में उतारने का प्रयास किया जाता रहा है। ''भारतीय पुराकथाएं अपनी कालजयी चेतना के कारण सहस्त्रों वर्षों से किसी–न–किसी रूप में उपस्थित रही हैं। भारत में इन पुराकथाओं को मिथकों की श्रेणी में स्थान दिया गया है।''[2] सन् 1947 में भारत के आजादी के साथ ही उसका विभाजन होना, तत्पश्चात् भारत–पाक युद्ध का होना, बांग्लादेश का आजाद होना इत्यादि कुछ ऐसी घटनाएँ हैं, जिसने राम एवं उनसे जुड़े मिथकीय कथानकों की ओर आधुनिक रचनाकारों का ध्यान आकृष्ट किया है। इन रचनाकारों में नरेंद्र कोहली जी का भी नाम सुमार है। ''नरेंद्र कोहली जी ने उपन्यासों में युगचेतना को प्रतिबिंबित करने और उसके विश्लेषण करने के लिए पौराणिक कथाओं का प्रयोग किया है।''[3] उन्होंने राम के पौराणिक कथा को युगीन परिस्थियों के धरातल पर लाकर उसकी विशद् व्याख्या की है। उनकी रचनाकार सुलभ दृष्टि ने राम तथा उनसे जुड़ी कथानक को सिर्फ बीती हुई कथा के तौर पर नहीं देखा है। अपितु, पाठकों के समक्ष उन्होंने उसे आधुनिक जीवन की एक ज्वलंत गाथा के रूप में पेश किया है। उपन्यासकार नरेंद्र कोहली जी एक कलासाधक होने के साथ–साथ जीवन के व्याख्याता भी रहे हैं। उनकी रचना वर्तमान समाज के किसी न किसी अंग को स्पर्श करती प्रतीत होती है। यही कारण है कि रामायण, रामचरितमानस इत्यादि में चित्रित पौराणिक पात्रों को उन्होंने हमारे बीच उपस्थित पात्रों के रूप में ही देखा है तथा उनकी सहायता से आधुनिक जीवन के यथार्थ को प्रतिलक्षित करने का प्रयास किया है। आजादी के पश्चात् भारत की आम जनता अपने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिवेश से आक्रांत और क्षुब्ध थी। उनकी क्षुब्धता कोहली जी के 'दीक्षा' उपन्यास के अनेक पौराणिक और काल्पनिक पात्रों के चेहरों पर स्पष्ट दिखाई पड़ती है। वर्तमान समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार, अनाचार, शोषण–वृत्ति और मूल्य विघटन जैसे सामाजिक बुराइयों के यथार्थ चित्र को खींचने के लिए उपन्यासकार कोहली जी ने प्रचलित रामकथा के पौराणिक प्रसंगों एवं पात्रों का सहारा लिया है तथा अपनी कल्पनाशीलता से उन्हें वर्तमान संदर्भों के साथ प्रस्तुत किया है। यही कारण है कि उपन्यास में राजा दशरथ के साम्राज्य में रह रही जनता अनेक सामाजिक बुराइयों से घिरी नजर आती हैं। 'दीक्षा' उपन्यास आधुनिक जीवन की खामियों और खूबियों से भरे पड़े हैं तथा समकालीन जीवन की विशेषताओं को व्यक्त करते हैं। अतः यह कहना गलत न होगा कि रामकथा पर आधृत इस उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य ही समकालीन जीवन की झलक को पौराणिक परिवेश के माध्यम से प्रस्तुत करना रहा है। उपन्यास की कथा के दौरान ऐसे अनेक पौराणिक प्रसंगों एवं घटनाओं का उल्लेख किया गया है, जो कहीं न कहीं वर्तमान समकालीन संदर्भों से साम्य रखते हैं। ऋषि विश्वामित्र के साथ वन जाने के दौरान युवा राम को यह सोचते हुए दिखाया गया है कि–''कहाँ थे राम और कहाँ आ गये? यदि कही विश्वामित्र उन्हें बुलाने अयोध्या नहीं आते, तो राम अपने राजभवन में सुख का जीवन व्यतीत कर रहे होते। विभिन्न माताओं का बैर–विरोध देखते। मंत्रियों तथा ब्राह्मणों के दलों का जूझना देखते.....।''[4] कोहली जी के उपन्यास में राम की ऐसी सोच वर्तमान भारत के युवा पीढ़ी की सोच को प्रदर्शित करती है। कथा के अनुसार गृहकलह के कारण ही राम अपने घर से दूर जाना चाहते थे। यदि वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात की जाए तो हम पायेंगे कि आधुनिक समाज के अधिकांश युवा–पीढ़ी आज गृहकलह के कारण अपने घरों से दूर होते जा रहे हैं। शांति और प्रेम के अभाव में इनके मन में विरक्ति की भावना जन्म ले रही है। अतः कोहली जी के राम और वर्तमान समाज के युवाओं के बीच पनपती सोच में एकरूपता नजर आती है।

दीक्षा उपन्यास में राम को अतिमानवतावाद और अवतारवाद की कल्पना से दूर रखते हुए एक ऐसे साधारण युवक के रूप में चित्रित किया गया है, जो विलासी राजा की उपेक्षित रानी के पुत्र होने के कारण पिता की उपेक्षा से अत्यंत संवेदनशील हो जाता है। उपन्यास के एक प्रसंग में जब विश्वामित्र उन्हें राजकुमार के जीवन से हटकर एक साधारण व्यक्ति के अस्तित्व के मान–अपमान एवं न्याय–अन्याय के संघर्ष को देखने को कहते हैं, तब राम अपनी संवेदना प्रकट करते हुए उनसे यह कहते दिखते हैं कि –''एक उपेक्षिता माता के सबकी आँखों में खटकने वाले पुत्र के विषय में यह मान लेना उचित नहीं कि वह दुख से अनभिज्ञ होगा, दूसरों के लिए करूणा से शून्य होगा और न्यायान्याय के संघर्ष से उसका परिचय नहीं होगा।''[5] यहाँ राम की उक्त संवेदनीय कथन आधुनिक समाज के कुछ ऐसे परिवारों और राजपरिवारों के अंदर की उन परिस्थितियों को उजागर करता है, जहाँ एक से ज्यादा पत्नियाँ एक साथ एक ही परिवार में रहती हैं। ऐसे परिवारों में अनचाही पत्नी के बच्चों को पिता और परिवार की उपेक्षा सहनी पड़ती है, जो कि युवावस्था आने पर अपमान और उपेक्षा की पीड़ा देती है। ऐसे बच्चे परित्यक्त बच्चों की श्रेणी में गिने जाते हैं। इस प्रकार वर्तमान समय में बाहरी तौर से संपन्न और सुव्यवस्थित दिखने वाले राजपरिवारों में बच्चे किस मानसिक विकृतियों के बीच पलकर बड़े होते हैं, वर्तमान समाज के उस यथार्थ को कोहली जी ने बड़ी ही सफलता के साथ राम के संवेदनशील वक्तव्यों के माध्यम से उजागर किया है।

'दीक्षा' उपन्यास में रामकथा की एक और महत्त्वपूर्ण पात्रा 'सीता' के चरित्र को भी राम की ही भांति लौकिक एवं मानवीय धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। उपन्यास में उन्हें अज्ञातकुलशीला के रूप में चित्रित किया गया है। अज्ञातकुलशीला होने के कारण क्षत्रिय समाज का कोई भी योग्य पुरूष सीता से विवाह हेतु तैयार नहीं होता है। इस कारण जनक दुःखी होकर उन्हें वीर्यशुल्का घोषित कर देते हैं अर्थात् एक ऐसी कन्या जिन्हें कोई भी राजकुमार या राजा पराक्रम दिखकर अपना बना सकता था। राजा जनक ने इस प्रकार की घोषणा इस कारण कि ताकि राजपुत्री होने के बावजूद सीता पर विवाह न होने का कलंक न लगे। इस प्रकार उपन्यास में वर्णित सीता विवाह प्रसंग को वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत कर वर्तमान समाज में पुत्री के विवाह के लिए चिंतित माता–पिता की मानसिक व्यथा का यथार्थ और सजीव चित्रण किया गया है।

वर्तमान में कुछ महाशक्तिशाली राष्ट्र छोटे–छोटे राष्ट्रों को आतंकवाद के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। उन्हें सैनिक प्रशिक्षण की सुविधाओं के साथ–साथ अत्याधुनिक शस्त्रास्त्र, विस्फोटक एवं विध्वंसक सामग्री देकर शक्तिशाली बना रहे हैं, जिससे राक्षसी प्रवृतियों को प्रोत्साहन मिल रहा है। इस तरह रक्षक ही भक्षक बन रहे हैं। इनके कारण वर्तमान में निरीह जनता त्राहि–त्राहि पुकार उठती है। वर्तमान संदर्भ में रक्षक से भक्षक बनकर जनता का शोषण करने वाले शासनतंत्र, राज्यकर्ताओं एवं राष्ट्रों के ऐसे ही चेहरों का पर्दाफार्श कोहली जी ने विश्वामित्र के शिष्य आजानुबाहु के माध्यम से किया है। उपन्यास में वर्णित एक प्रसंग में विश्वामित्र द्वारा सिद्धाश्रम में राक्षसों के आतंक से मुक्ति दिलाने के लिए शासन प्रतिनिधियों की मदद लेने बात कहने पर उनके शिष्य अजानुबाहु उनसे कहते हैं कि– ''मैंने तो सुना है कि अनेक बार ये राक्षस तथा उनके मित्र शासन प्रतिनिधि को पहले से ही सूचित कर देते हैं कि वे लोग किसी विशिष्ट समय पर, विशिष्ट स्थान पर कोई अत्याचार करने जा रहे हैं.....शासन प्रतिनिधि को चाहिए कि वह उस समय अपने सैनिकों को उधर जाने से रोक ले और शासन प्रतिनिधि भी वही करता है.....इस कृपा के लिए शासन प्रतिनिधि को पूर्ण पुरस्कार दिया जाता है।.....''[6] अजानुबाहु की उक्त कथन आधुनिक समाज में रक्षक के भेष में बैठे भक्षक के चेहरे को उजागर करता है। वर्तमान में जनता की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध शासनकर्मी ही देश के भक्षकों के हाथों बिककर या तो अपने कर्त्तव्यों से मुख मोड़ लेते हैं या फिर वहाँ खड़े होकर तमाशबीन बने रहते हैं। वर्तमान समाज के ऐसे भक्षकों को मुखोटों से बाहर लाने के लिए नरेंद्र कोहली जी ने अजानुबाहु की सहायता ली है।

उपन्यास में समकालीन शोषण को व्यक्त करने के लिए विश्वामित्र और अन्य ऋषियों के चिंतन का सहारा लिया गया है। उपन्यास में विश्वामित्र के सिद्धाश्रम और उसके निकटवर्ती इलाकों में फैले शोषण के स्वरूप को उजागर करते हुए आजानुबाहु अपने गुरु विश्वामित्र को बताते हैं कि– ''हमारे आश्रमवासियों में अभी भी थोड़ा सा आत्मबल और तेज है। अतः आश्रम के भीतर हमें उतना अनुभव नहीं होता, अन्यथा आश्रम के बाहर तो स्थिति यह है कि सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में राक्षस तथा उनके अनुयायी व्यक्ति का धन छीन लेते हैं, उसे पीट देते हैं, उसकी हत्या कर देते हैं। जनाकीर्ण हाट बाजार में महिलाओं को परेशान किया जाता है, उन्हें अपमानित किया जाता है, उनका अपहरण किया जाता है और जनसमुदाय खड़ा देखता रह जाता है। जनसमुदाय अब मानो नैतिक–सामाजिक भावनाओं से शून्य, हतवीर्य तथा कायर जड़ वस्तु है। जिसके सिर पर पड़ती है, वह स्वयं भुगत लेता है.....शेष प्रत्येक व्यक्ति इन घटनाओं से उदासीन, स्वयं को बचाता सा निकल जाता है। इससे अधिक शोचनीय स्थिति क्या होगी, आर्य कुलपति?[7] अजानबाहु का उक्त व्यक्त वर्तमान संदर्भ में भी प्रतिलक्षित होता है। शोषण का यह स्वरूप वर्तमान समकालीन शोषणतंत्र पर प्रकाश डालता है। इंटरनेट में प्रकाशित एक समाचारपत्र के आकड़ों पर गौर किया जाए तो हम पायेंगे कि वर्तमान समाज में महिला सुरक्षा से जुड़े तमाम कानून और बहसों के बावजूद देश में महिला से जुड़े अपराधों में कोई कमी नहीं आई है। आजतक ई. अखबार की माने तो ''भारत में प्रत्येक 15.2 मिनट में एक महिला के साथ बलात्कार होता है। हर 3.8 दिन में पुलिस कस्टडी में एक बलात्कार होता है। हर 4 घंटे में एक गैंगरेप की वारदात होती है। तो हर 2 घंटे में एक बलात्कार का असफल प्रयास होता है।''[8] महिलाओं के शोषण से जुड़े यह आकड़ें आधुनिक समाज के वीभत्स चेहरे को उजागर करती है। ऐसा कतई नहीं है कि शर्मसार करने वाली यह सभी वारदातें आधुनिक भारत की दास्तान मात्र हैं। प्रत्येक युग में महिलाओं को प्रताड़ित किया जाता रहा है। राम के युग में भी महिलाएं अक्सर प्रताड़ना का शिकार बनती रही हैं। कभी राक्षसों द्वारा तो कभी समाज द्वारा इन्हें प्रताड़ित किया गया। 'दीक्षा' उपन्यास में उपन्यासकार कोहली जी ने जिस अहल्या के पौराणिक प्रकरण को वर्णित किया है, वह अहल्या वर्तमान भारत के प्रत्येक समाज में उपस्थित है। यह वह समाज है जहाँ आज भी इंद्र रूपी राक्षस देव रूप धारण कर अहल्या जैसी अबला नारियों को अकेला देखकर केवल आक्रमण ही नहीं करता वरन् पकड़े जाने पर उलटे स्त्रियों पर ही सारा आरोप मढ़ देता हैं तथा समाज से बहिष्कृत करवा देता है। यह कथा सिर्फ अहल्या की ही नहीं है वरन् यह वर्तमान समाज के हर उस औरत की कथा है, जो किसी न किसी रूप में इन्द्र जैसे राक्षसों का ग्रास बनती हैं और समाज से बहिष्कृत होकर अहल्या जैसी जड़वत् जीवन जीने के लिए मजबूर होती हैं। देश में युवतियाँ, किशोरियाँ, बच्चियाँ जिस प्रकार दरिदों की वासना का शिकार बन रही हैं, उन पर हो रहे अत्याचार की कहानी उपन्यास में राक्षसों के अत्याचार की शिकार बनी निषाद

स्त्रियों की कहानी से अलग नहीं है। निषाद स्त्रियों पर हुए अत्याचारों की कथा को वर्तमान परिस्थितियों के साथ साम्य करते हुए बयां किया गया है। उपन्यास के एक प्रसंग में निषाद स्त्रियों पर राक्षसों द्वारा किये गए अत्याचार की सूचना देते हुए आजानुबाहु विश्वामित्र को कहते हैं कि– ''अवसर देखकर आर्य युवकों का वही दल ग्राम में घुस आया।.....अकेला अस्वस्थ गहन क्या करता। उन्होंने उसे पकड़कर एक खम्भे के साथ बांध दिया। उसकी वृद्धा पत्नी, युवा पुत्रवधुओं तथा बाला दुहिता को पकड़कर गहन के सम्मुख ही नग्न कर दिया। उन्होंने वृद्ध गहन की आँखों के सम्मुख बारी–बारी उन स्त्रियों का शील–भंग किया। फिर उन्होंने जीवित गहन को आग लगा दी और जीवित जलते हुए गहन की उस चिता में लौह शलाकाएं गर्म करके उन स्त्रियों के गुप्तांगों पर उनकी जाति चिन्हित की....''[9] सिद्धाश्रम में आर्य शासनकर्मियों द्वारा निषाद स्त्रियों पर किये गये यौन वासना–उत्पीड़न का यह दर्दनाक और वीभत्स वर्णन वर्तमान समय में बिहार में घटित आदिवासी स्त्रियों के यौन–उत्पीड़न की घटना का स्मरण करा जाता है। समाज में नारी के शोषण के इस यथार्थ स्वरूप को कोहली जी ने रामकथा के नारी पात्रों के द्वारा उजागर करने का सफल प्रयास किया है।

वर्तमान समय में देश के राजनीतिज्ञों की दायित्वहीनता, स्वार्थांधता ने सामाजिक परिवेश में इतनी अव्यवस्था एवं अराजकता फैला दी है कि कहीं भी कोई सुरक्षित नजर नहीं आता। जंगल में जैसे हिंसक पशु और बाघ का डर होता है, वैसे ही वर्तमान आधुनिक युग में कोई न कोई गुंडा, राजनीतिज्ञ अथवा आतंकवादी अपना वर्चस्व बनाये हुए है। संपूर्ण विश्व एक डर और खौफ के वातावरण में जी रहा है। इसी खौफ के वातावरण को नरेंद्र कोहली जी ने अपने 'दीक्षा' उपन्यास के ताड़कावन प्रसंग में प्रतिलक्षित किया है। वर्तमान में जिस प्रकार समाज खौफनाक वातावरण में साँसें लेने को मजबूर है, ठीक वैसा ही डर उपन्यास में वर्णित ताड़कावन के आस–पास महसूस किया जा सकता है। इस प्रकार 'दीक्षा' उपन्यास के पौराणिक प्रसंगों के माध्यम से कोहली जी ने वर्तमान समकालीन जीवन के यथार्थ की स्पष्ट झलक प्रस्तुत की है। उपन्यास में वर्तमान जीवन को संचालित, प्रभावित और नियंत्रित करने वाले सामाजिक तत्त्वों का सफल चित्रण हुआ है।

निष्कर्षः– निष्कर्षतः यह कहना गलत नहीं होगा कि राम पर आधृत 'दीक्षा' उपन्यास उस दर्पण के समतुल्य है, जिसका निर्माण राम के पौराणिक कथा–प्रसंगों से हुआ है; किन्तु उसके समक्ष खड़े होने पर जो प्रतिबिंब पाठकों को दिखाई पड़ता है वह आज के आधुनिक समाज के चित्र को प्रस्तुत करता है। आधंनिक समाज के जिस रूप को कोहली जी ने अपनी आँखों से देखा, पाठकों के समक्ष उन्हीं रूपों को प्रस्तुत करने के लिए उन्होंने राम के पौराणिक कथा का सहारा लिया, जिसमें उन्हें आशातीत सफलता मिली। 'दीक्षा' उपन्यास की रचना कर उन्होंने पाठकों को वर्तमान युग में अवस्थित अनेक सामाजिक समस्याओं को देखने और समझने का मौका दिया। आधुनिक समाज स्त्रियों के प्रति क्या सोच रखता है?, समाज में लगातार बढ़ते स्त्रियों के शोषण के स्वरूप का स्तर क्या है?, युवाओं की आधुनिक सोच क्या है? इत्यादि प्रश्नों के उत्तर देने के लिए रामकथा के पौराणिक पात्रों और प्रसंगों के चुनाव में कोहली जी को पूर्ण सफलता मिली है। उपन्यास में पौराणिक कथा के माध्यम से आधुनिक कथा की व्याख्या की गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. www.rachnakar.org, सुरेंद्र वर्मा, मैथलीशरण गुप्त की मूल्य चेतना
2. के0 सी0 सिंधु, रामकथा कालजयी चेतना, प्र0आ0 2012, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, पृ0सं0 9
3. के0 सी0 सिंधु, रामकथा कालजयी चेतना, प्र0आ0 2012, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, पृ0सं0 10
4. नरेंद्र कोहली, अभ्युदय भाग–1, दीक्षा खण्ड, डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा0 लि0, नई दिल्ली, सं0 2014 पृष्ठ सं0 103
5. पूर्ववत्, पृष्ठ सं0 38
6. नरेन्द्र कोहली, अभ्युदय भाग–1, दीक्षा, पृष्ठ सं0 15–16
7. नरेन्द्र कोहली, अभ्युदय भाग–1, दीक्षा, पृष्ठ सं0 14
8. aajtak.intoday.in संपादक–अभिषेक आनंद, दिसंबर 2016, एक साल में भारत में 34 हजार से अधिक महिलाओं का हुआ रेप।
9. नरेन्द्र कोहली, अभ्युदय भाग–1, 'दीक्षा', पृष्ठ सं0 17